अन्य प्रवचन स्वामी जी

1. धर्मी जीव किस स्थान को तीर्थ के समान पूज्यनीय मानते है।

उ0 तीर्थंकर व निर्ग्रंथ मुनिराज जहॉ–जहॉ पैर रखते है और जहॉ देवाद्यिदेव के चरण पड़े वह धूल वह आषन वह स्थान धर्मी जीव के लिए तीर्थ के समान पूज्यनीय हो जाता है।

प्रवीण जैन कक्षा–9

2. इन्द्र पद किस जीव को सड़े हुए तृण के समान लगने लगता है।

उ0 स्वभाव की पहचान होते ही ज्ञानी जीव विष्व कि अनंत प्रतीकुलताओं को नही गिनता और इन्द्र पद जैसे अनुकूल पुण्य को सड़े हुए तृण के समान मानता है।

शाश्वत जैन कक्षा–9

3. आत्म तत्व को परोक्ष कोन दिखलाता है।

उ0 केवल ज्ञान को अनुसरण करके जो श्रुतज्ञान है वही आत्म तत्व को परोक्ष दिखलाता है।

अंकित जैन कक्षा–8

4. हम किसे अपना मानकर दुख भोगते है।

उ0 स्वाभाव की अपेक्षा से देखने पर आत्मा में राग–द्वेष नही है जीव अवस्था में राग–द्वेष करता है जो कि अज्ञान है और उसे अपना मानकर दुख भोगता है।

अनिकेत जैन कक्षा–6

5. सबसे बड़ी भूल क्या है।

उ0 पर अपने रुप नही है और स्वयं पररुप नही है इसलिए पर अपना कुछ कर सकता है या स्वयं पर का कुछ कर सकता है ऐसा मानना से बहुत बड़ी भूल है।

अक्षय जैन कक्षा–7

सी.डी प्रवचन स्वामी जी–487

1. यहॉ सामान्य और विशेष किसे कहॉ ?

उ0 यहॉ द्रव्य को सामान्य कहॉ तो गुण को विशेष कहा अगर गुण को सामान्य कहा तो पर्याय को विशेष कहॉ यहॉ द्रव्य आत्मा और गुण सर्वदर्शी हुआ।

उज्वल जैन कक्षा–10

2. सर्वदर्शी शक्ति आत्मा में है ये कब मेरा कहने में आता है। ,

उ0 अपनी पर्याय में उसका परिणमन हो है सर्वदर्शी शक्ति उसका दमदार आत्मा उसकी ऊपर दृष्टी हो परिणमन हो तब सर्वदर्शी शक्ति में दमदार प्रभु मेरा कहने में आता है।

सम्मद जैन कक्षा–10

3. हमें सबसे पहले क्या करना चाहिए।

उ0 हमें सबसे पहले आत्मा को जानना चाहिए ऐसा कहा जैसे कोई धन का इच्छार्थी पुरुष धन प्राप्त करना चाहता है तो उसे बहुत प्रकार से उद्यम से पहले राजा को जाने फिर उसी का श्रद्धान करे कि वह राजा है उसकी सेवा करने से जरुर धन की प्राप्ति होगी इसी प्रकार मोक्षार्थी पुरुष सब बातो को छोड़कर पहले आत्मा को जाने और उसी का श्रद्धान कर

अभय जैन कक्षा–10

4. ज्ञान और आत्मा की शक्ति क्या है।

उ0 ज्ञान अखण्ड स्वतंत्र पदार्थ है यह ज्ञान कि शक्ति है तथा आत्मा ज्ञान दर्शनमय है अतः यह आत्मा की शक्ति है।

सोमिल जैन कक्षा–9

5. सर्वदर्शी में दमदार आत्मा की श्रद्धा कब हुई।

उ0 जैसा परिणमन हुआ तब सर्वदर्शी परयाय में उसकी ताकत का अंश परिणमन में आया तब सर्वदर्शी में दमदार आत्मा की श्रद्धा हुई।

मयंक जैन कक्षा–10